ISSN: 2839-6197

वाग्धारा

बहुभाषिक पीयर रिव्यू शोध पत्रिका

वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल-जून, 2026

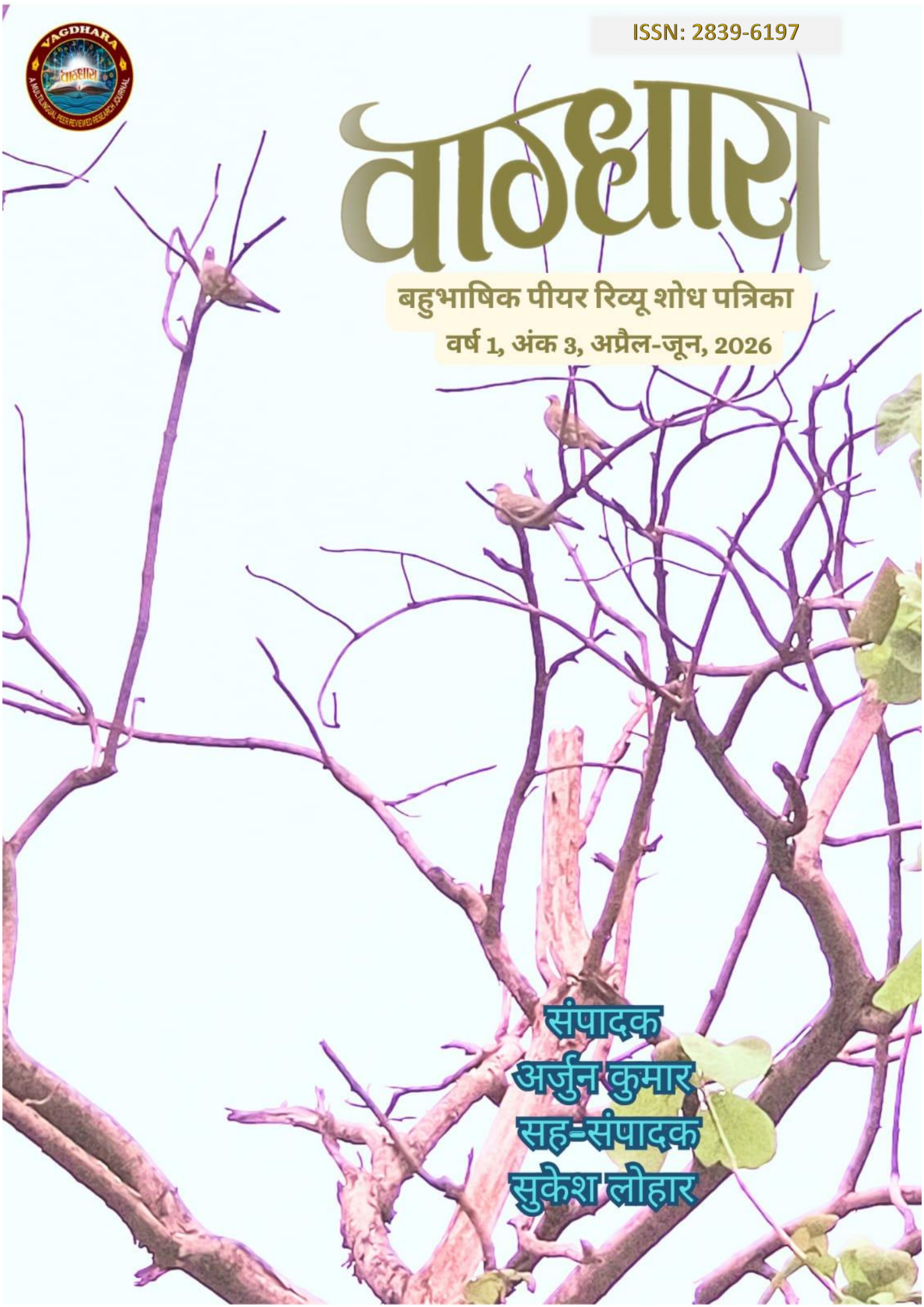

संपादक
अर्जुन कुमार
सह-संपादक
सुकेश लोहार

ISSN: 2839-6197

Vagdhara

बहुभाषिक पीयर रिव्यू शोध पत्रिका

वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल-जून, 2026

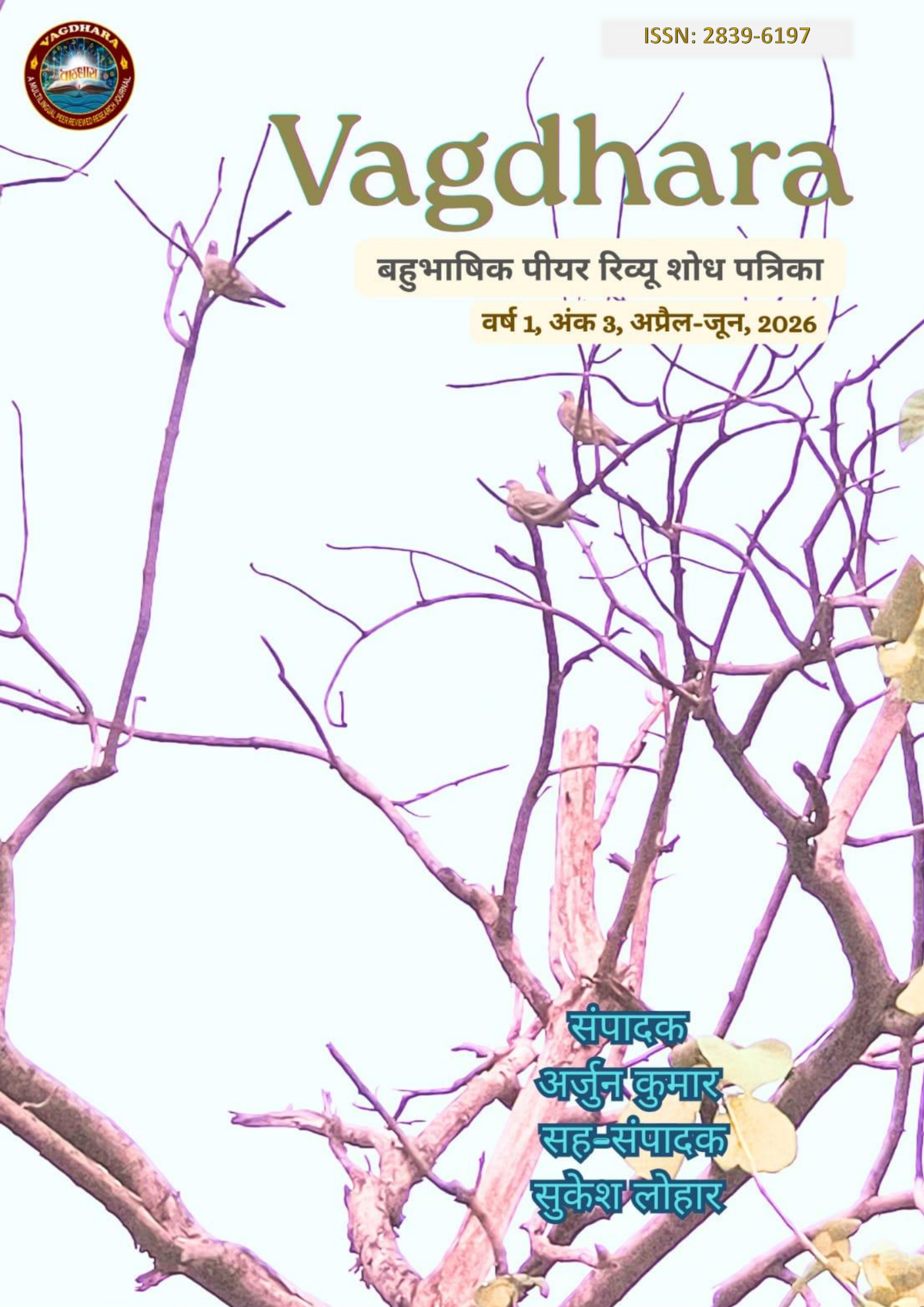

संपादक
अर्जुन कुमार
सह-संपादक
सुकेश लोहार

ISSN: 2839-6197

वाग्धारा

बहुभाषिक शोध विमर्श का नया अध्याय

अंक-3, वर्ष-1,
पूर्णांक-3, वर्ष-1,
अप्रैल-जुन, 2026

संपादक
अर्जुन कुमार
सह-संपादक
सुकेश लोहार

सर्वाधिकार सुरक्षित
वाग्धारा में प्रकाशित लेखों के साथ वाग्धारा प्रकाशन या संपादकों की सहमति होना आवश्यक नहीं है।

सम्पर्क
संपादक, वाग्धारा
क्वाटर नं. 08, प्रथम तल, इंदिरा गांधी सेंटर,
दक्षिणपल्ली, विश्वभारती, शांतिनिकेतन,
बीरभूम, पश्चिम बंगाल, 731235
मो. 8420143895 /

सम्पादक अवैतनिक

कृतज्ञता: © प्रिया तिवारी, आवरण पृष्ठ।

पूर्व समीक्षित बहुभाषिक शोध पत्रिका
(A Multilingual Peer Reviewed Research Journal)

संपादक मंडल
डॉ. चंद्रकांत सिंह
डॉ. जगदीश भगत
डॉ. शरत कुमार जेना
डॉ. रणवीर भगवान सुमेध
डॉ. धनेश्वर मांझी
डॉ. मयंक भार्गव
डॉ. राजीव रंजन प्रसाद
डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता
डॉ. अभिलाष कुमार गोंड
डॉ. अजय कुमार शर्मा

सेंटिंग एंड वेब मैनेजमेंट
डॉ. अजय कुमार शर्मा

नोट : समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र बोलपुर, बीरभूम, पश्चिम बंगाल होगा।

अनुक्रमणिका

		पृ. सं.
संपादकीय		V
वांचो जनजातीय लोकसाहित्य में अभिव्यक्त गोदना परंपरा एक सांस्कृतिक अध्ययन	मो. जोहुरुल इस्लाम	1-5
देवशीष पाणिग्राही का कथासंसार विमुग्ध विन्यास	शरत कुमार जेना	6-11
21वीं सदी की साहित्यिक हिन्दी पत्रकारिता में प्रस्तुत समसामयिक प्रश्न	मनीष कुमार उपाध्याय	12-16
मानव-मूल्यों से संघर्ष करती ओमपक्राश वाल्मिकी की कविताएँ	डॉ. बिजेन्द्र कुमार	17-25
मिस रमिया दलित नारी की पीड़ा और प्रतिरोध की गाथा	अमित लोहार	26-33
'पानी के प्राचीर' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश के विविध आयाम	आशुतोष मणि त्रिपाठी	34-37
ठीकरे की मंगनी : परिधि के अंदर और परिधि के बाहर की स्त्री का अंतर्द्वंद	हिमा देवी छेत्री डॉ. राजीव रंजन प्रसाद	38-41
निराला के गीतों पर तुलसीदास का प्रभाव	डॉ. बिजय रवानी	42-45
राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में श्रद्धा का योगदान	छोटे लाल प्रसाद	46-48
ସ୍ୱାଧୀନତା ପରବର୍ତ୍ତୀ ଓଡ଼ିଆ କବିତାରେ ସମାଜ ଚେତନା : ଏକ ଅନୁଶୀଳନ	ସୌଦାଗର ସିଅ	49-58
प्राथमिक शिक्षणाच्या संदर्भात संताली भाषेचे महत्व : एक चिकित्सक अभ्यास	रणवीर सुमेध भगवान	59-63

संपादकीय

समय के साथ इंसान ने बहुत तरक्की की है। हालाँकि तरक्की सकारात्मक शब्द है, लेकिन इसने इंसान को जटिल जीवन स्थितियों में डाल दिया है। जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए ही अंतर-अनुशासनात्मक अध्ययन के नए आयाम खुलते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि कोई भी चीज़ स्वतंत्र नहीं है। सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है और एक-दूसरे को प्रभावित करता है। इसलिए अंतर-अनुशासनात्मक अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई। समाज, इतिहास, भूगोल, कला, संस्कृति समाज की सहज धारा के हिस्से हैं। यह अलग बात है कि इन सभी अनुशासनों की पद्धति और औजार अलग होते है लेकिन उनका ध्येय एक ही होता है, मानव समाज और उसके परिवेश को समझना। यह बात जब कही जा रही है, तो यह आपत्ति की जा सकती है कि इसमें मानव की केन्द्रीयता है। इसलिए इस बात को संशोधित करके कहना चाहिए कि जीव जगत और परिवेश को समझने में अध्येता लगे हुए हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हम प्रयास कर रहे हैं कि अनेक भाषा और अनुशासन में मौजूद ज्ञान को अध्येताओं के लिए सुलभ बनाया जाये। इसी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हम वाग्धारा का नया अंक लाये हैं। यह अलग बात है कि हम अपने उद्देश्यों में कितने सफल हुए हैं, सुधि पाठक इसका आकलन करेंगे।

इस अंक में कुल ग्यारह लेखों का चयन किया गया है जिसमें नौ लेख हिंदी भाषा में हैं तथा एक लेख ओडिया भाषा में एवं एक लेख मराठी में है। हिंदी लेखों में मो. जोहुरुल इस्लाम का शोधालोख 'वांचो जनजातीय लोकसाहित्य में अभिव्यक्त गोदना परंपरा : एक सांस्कृतिक अध्ययन' पर केन्द्रीत है। शरत कुमार जेना 'देवशीष पाणिग्राही का कथासंसार विमुग्ध विन्यास' है। मनीष कुमार उपाध्याय '21वीं सदी की साहित्यिक हिन्दी पत्रकारिता में प्रस्तुत समसामयिक प्रश्न' है। डॉ. बिजेन्द्र कुमार मानव-मूल्यों से संघर्ष करती ओमपक्राश वाल्मिकी की कविताएँ। अमित कुमार लोहार का शोधालेख 'मिस रमिया दलित नारी की पीड़ा और प्रतिरोध की गाथा'। आशुतोष मणि त्रिपाठी ने शेखर जोशी के उपन्यास पर केन्द्रित 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश के विविध आयाम शोधालोख लिखा है। हिमा देवी छेत्री और डॉ. राजीव रंजन प्रसाद ठीकरे की मंगनी : परिधि के अंदर और परिधि के बाहर की स्त्री का अंतर्द्वंद। डॉ. बिजय रवानी ने निराला के गीतों पर तुलसीदास के प्रभाव देखने की कोशिश अपने सोधालेख 'निराला के गीतों पर तुलसीदास का प्रभाव' के अंतर्गत किया है। छोटे लाल का शोधालेख 'प्रसाद राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में श्रद्धा का योगदान' का सूक्ष्म अध्ययन किया है। ଶ୍ୱୋଦାଗର ସିଅ ने 'ସ୍ୱାଧୀନତା ପରବର୍ତ୍ତୀ ଓଡ଼ିଆ କବିତାରେ ସମୟ ଚେତନା : ଏକ ଅନୁଶୀଳନ।' में स्वाधीनता परवर्ती ओडिया कविता में समय चेतना : एक अनुशीलन शीर्षक से लेख लिखा है। जबकि मराठी में रणवीर सुमेध भगवान का 'प्राथमिक शिक्षणाच्या संदर्भात संताली भाषेचे महत्व : एक चिकित्सक अभ्यास' शीर्षक एक लेख है।

अंत में उन सब का धन्यवाद, जिनके सहयोग से पत्रिका का यह अंक प्रकाशित हो पा रहा है।

संपादक मंडल